International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 25-08-2022, Accepted: 12-09-2022, Published: 27-09-2022
Volume 8, Issue 5, 2022, Page No. 16-17

समकालीन संवेदना और 'दंगे में मुर्ग़ा'

प्रतिमा यादव
शोधार्थी, भारतीय भाषा केंद्र भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अध्ययन, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

सारांश
ज्ञान चतुर्वेदी के व्यंग्य समाज में व्याप्त विभिन्न विसंगतियों अपना आधार बनाते हुए उनपर प्रहार करने का कार्य करते हैं। उनके व्यंग्यों का केंद्रीय–विषय समाज की केवल एक विसंगति पर नहीं वरन् सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, प्रशासनिक, शैक्षणिक एवं मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं आदि पर केंद्रित होता है। ज्ञान चतुर्वेदी जी ने न सिर्फ़ सामाजिक सरोकारों को अपने व्यंग्यों का आधार बनाया है वरन् उन्होंने अपने व्यंग्यों के माध्यम से समाज में व्याप्त विसंगतियों के प्रति संवेदना जागृत करने का भी कार्य किया है। 'दंगे में मुर्ग़ा' व्यंग्य–संग्रह महज़ एक कुशल रचना ही नहीं है वरन् समाज को एक नयी दिशा दिखाने में भी सहायक है। ऐसी दिशा जहां व्यक्ति सामाजिक संवेदना के साथ–साथ व्यक्तिगत संवेदना के प्रति भी सजग हो।

मूल शब्दः ज्ञान चतुर्वेदी; दंगे में मुर्गा; व्यंग्य; व्यंग्य–संग्रह; ज्ञान चतुर्वेदी के व्यंग्य; ज्ञान चतुर्वेदी की व्यंग्य–रचना दंगे में मुर्ग़ा; सामाजिक व्यंग्य; व्यंग्य एवं संवेदना; दंगे में मुर्ग़ा की संवेदना; ज्ञान चतुर्वेदी और संवेदना; ज्ञान चतुर्वेदी के व्यंग्यों में संवेदना

प्रस्तावना

'दंगे में मुर्ग़ा' ज्ञान चतुर्वेदी द्वारा लिखित एक व्यंग्य संग्रह है। ज्ञान चतुर्वेदी के व्यंग्य समाज में व्याप्त विभिन्न विसंगतियों अपना आधार बनाते हुए उनपर प्रहार करने का कार्य करते हैं। उनके व्यंग्यों का केंद्रीय–विषय समाज की केवल एक विसंगति पर नहीं वरन् सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, प्रशासनिक, शैक्षणिक एवं मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं आदि पर केंद्रित होता है। इस शोध–पत्र में विषय–वैविध्यता के साथ लिखे गए ज्ञान चतुर्वेदी के व्यंग्य संग्रह 'दंगे में मुर्ग़ा' (सन् १९९८ में प्रकाशित) को आधार बनाया गया है। आगे बढ़ाने से पूर्व 'संवेदना' के अर्थ को परिभाषित करना आवश्यक प्रतीत होट है। 'संवेदना' शब्द संस्कृत का शब्द है जिसका अर्थ 'सुख–दुःख का महसूस होना' होता है। 'संवेदना' शब्द का निर्माण 'वेदना' में 'सम्' उपसर्ग लगाने से हुआ है। 'सम् 'का अर्थ सम्यक् रूप से, प्रत्यक्ष रूप से एवं समान रूप से होता है। इस प्रकार अगर 'संवेदना' की बात करें तो इस शब्द का अर्थ सम्यक, प्रत्यक्ष या समान रूप से महसूस की जाने वाली वेदना होता है। अर्थात् दुःख, पीड़ा, कष्ट आदि को महसूस करना या उसके बारे में ज्ञान होना संवेदना कहलाती है। प्रायः लोग संवेदना और सहानुभूति को एक दूसरे का पर्याय समझ लेते हैं। अगर ध्यान से समझें तो दोनो में पर्याप्त अंतर है। 'सहानुभूति' को मानक हिंदी कोश में निम्न प्रकार से परिभाषित किया गया है–

1. "ऐसी अनुभूती जो साथ–साथ दो या अधिक व्यक्तियों की हो।
2. वह अवस्था जिसमें मनुष्य दूसरे की अनुभूती (विशेषतः कष्टपूर्ण अनुभूती) का नौभाव शुद्ध हृदय से करता है और उससे उसी प्रकार प्रभावित होता है जिस प्रकार दूसरा व्यक्ति हो रहा हो।
3. अनुकम्पा अथवा दया।[1]

इस प्रकार सहानुभूति शब्द की अगर बात करें तो इसके लिए दो या दो से अधिक व्यक्तियों के हृदय में समान मनोभावों की उत्पत्ति होना आवश्यक है। सहानुभूति के अंतर्गत पीड़ित व्यक्ति को स्वयं कष्ट महसूस करना आवश्यक है। उस पीड़ित व्यक्ति के कष्टों को देखते हुए दूसरे व्यक्ति के हृदय में समान अनुभूती ही सहानुभूति है। वहीं अगर संवेदना की बात करें तो संवेदना किसी एक व्यक्ति के हृदय में भी जागृत हो सकती है। संवेदना निम्न अवस्थाओं में जागृत हो सकती है–

1. जब व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति के हृदय की पीड़ा को समझता है और उस पीड़ा की अनुभूति स्वयं उसके हृदय में होती है।
2. जब व्यक्ति किसी ऐसी विसंगति को देखता है जो पूरे समाज के लिए विसंगति है, किंतु उस समाज में उस विसंगति से प्रभावित लोग अभी भी उसे विसंगति नहीं मानते।
3. जब व्यक्ति किसी ऐसी विसंगति को देखता है जिसका प्रभाव पूरे समाज पर है, समाज नें उसे विसंगति माना भी है किंतु उस विसंगति से किसी व्यक्ति के हृदय में व्यक्तिगत रूप से पीड़ा या कष्ट नहीं देखा जा सकता है।

उपर्युक्त अवस्थाओं में से प्रथम अवस्था सहानुभूति की अवस्था भी हो सकती है, किंतु अन्य दो अवस्थाएँ मुख्यतः संवेदना को प्रदर्शित करती हैं। सन् १९९८ ई० में प्रकाशित ज्ञान चतुर्वेदी के व्यंग्य संग्रह 'दंगे में मुर्ग़ा' की बात करें तो इस व्यंग्य संग्रह के केंद्रीय–विषय में पर्याप्त विविधता देखने को मिलती है। जहाँ एक तरफ़ वे किसानों की दयनीय दशा का वर्णन करते दिखते हैं तो वहीं दूसरी तरफ़ प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा संस्कृति को अपने फ़ायदे के लिए प्रयोग करने की प्रवृत्ति पर प्रहार करते दिखते हैं। एक तरफ़ जहां ग्रामीण क्षेत्रों में सर्दी के दिनों में ग़रीबों के कष्टपूर्ण जीवन का वर्णन करते दिखाई देते हैं वहीं दूसरी तरफ़ सती प्रथा जैसे मुद्दों के आधार पर भारत में महिलाओं के ख़िलाफ़ हो रहे सामाजिक अत्याचार पर प्रहार करते हुए दिखते हैं। इसके अतिरिक्त इन्होंने 'दंगे में मुर्ग़ा' व्यंग्य संग्रह में अपने पिता के पद का फ़ायदा उठाने वाले लोगों, अत्यधिक गंभीर रहने वाले साहित्यकारों, ग्रामीण परिवेश में बैंक की सामान्य व्यवस्था, प्रेम प्रकट करने में असफल प्रेमियों, गाँव की रामलीला आदि को अपने व्यंग्यों का आधार बनाया है।

एक व्यंग्यकार समाज के रहने के कारण समाज का अभिन्न अंग होता है। उसे समाज में व्याप्त विभिन्न मान्यताओं, कुरीतियों, परम्पराओं, रूढ़ियों आदि से उसे रूबरू होना पड़ता है। समाज में व्याप्त इन सभी विषमताओं आदि को महसूस करते हुए एक व्यंग्यकार उसे अपने व्यंग्य का भाग बनाता है। 'दंगे में मुर्ग़ा' व्यंग्य संग्रह के व्यंग्यों में शैली की बात करें तो इन्होंने

वर्णनात्मक शैली, संवाद शैली, अन्योक्ति शैली आदि शैलियों के माध्यम से व्यंग्य रचना की है। वर्णनात्मक शैली की अगर बात करें तो इनके व्यंग्य–अध्याय 'किसान एक परिचय' एवं 'सर्दी के दिन' में यह शैली देखने को मिलती है। ज्ञान चतुर्वेदी नें सामाजिक जीवन के मर्म को महसूस करते हुए अपने व्यंग्यों में इनका उल्लेख किया है। किसान देश के लिए भले ही अन्नदाता की भूमिका निभाता हो किंतु वही किसान अपने बच्चों, अपने परिवार और स्वयं के पेट को भरने में असफल रहता है। उनके व्यंग्य 'किसान: एक परिचय' में किसानों के प्रति इसी संवेदना को प्रदर्शित किया गया है। किसानों की स्थिति का व्यंग्यात्मक ढंग से जो विवरण ज्ञान चतुर्वेदी जी प्रस्तुत करते हैं, वह पाठकों के मन को कचोट उठत्ता है। "किसान एक दोपाया जानवर है"[2] जैसे वाक्यों से किसानों की तुलना जानवरों से करते हुए किसानों की स्थिति को जानवरों से भी बदतर बताते हैं। ये शब्द पाठक के हृदय को बेधने का कार्य करते हैं। वहीं स्त्रियों की स्थिति के प्रति संवेदना व्यक्त करते हुए दहेज के लोभियों द्वारा की जा रही स्त्रियों की हत्या पर प्रहार करते हुए लिखते हैं "दहेज माँगो, तो लोग जेल भेजने की धमकी देते हैं। औरत एक बोझ बनती जा रही है। ऐसे में सती प्रथा का पुनर्जन्म हर दृष्टि से अच्छी बात है।"[3] इन शब्दों से ज्ञान चतुर्वेदी जी दहेज के लोभियों पर प्रहार करते हुए उनपर तंज कसते हुए नज़र आते हैं। दंगे के दौरान एक आम आदमी की स्थिति एक मुर्ग़े सी हो जाती है। आज़ादी के बाद भारत नें अनेक दंगों की विभीषिका देखी है। दंगों के दौरान एक आम आदमी की मनोदशा का वर्णन 'दंगे में मुर्ग़ा' नामक व्यंग्य में देखने को मिलता है। 'दंगे में मुर्ग़ा' व्यंग्य अध्याय आदमी की तुलना मुर्ग़े से करते हुए अन्योक्ति शैली में लिखा गया है। इस व्यंग्य अध्याय में ज्ञान चतुर्वेदी द्वारा प्रदर्शित मानवीय मूल्यों के प्रति एवं सामाजिक कुरीतियों के प्रति संवेदना के चरम को देखा जा सकता है। साथ ही यह अध्याय व्यंग्य की कुशलता को पूर्ण रूप से व्यक्त करता है और यह सिद्ध करता है कि व्यंग्य के माध्यम से किसी भी विभत्सता को सरलतापूर्वक प्रस्तुत किया जा सकता है। "फ़ैयाज़ मियाँ का घर धू–धू कर जल रहा था। लापते आसमान में। गली में दंगाइयों की चीत्कारती भीड़। पागल खुशी और लपटों की आँच से दमकते दंगाइयों के चेहरे। दोनो सिपाही वहीं खड़े मज़ा लेते, उत्साहित करते हुए दंगाइयों को। फ़ैयाज़ मियाँ के परिवार नें बाहर आने की कोशिश की, तो भीड़ ने लपटों में फेंक दिया। सबसे छोटे बच्चे को तो स्वयं सिपाही नें आग में उछाल दिया।"[4] ये पंक्तियाँ न सिर्फ़ दंगे की विभीषिका का वर्णन करती हैं वरन् दंगे के दौरान प्रशासनिक अधिकारियों के रवैए को भी उजागर करती हैं। किस तरह दंगाई भीड़ दंगे में हो रहे नर–संहार पर चीत्कार मारकर खुशी में दहाड़ती है। उक्त सामाजिक संवेदना के अतिरिक्त व्यक्तिगत मूल्यों के प्रति संवेदना प्रदर्शित करते हुए भी ज्ञान चतुर्वेदी जी नें व्यंग्य लेखन किया है। इसी संदर्भ में दंगे के दौरान दंगा प्रभावित क्षेत्र में नियुक्त एक सिपाही की मानसिक दशा का भी वर्णन करते हैं। सिपाही की बच्ची बीमार है, किंतु चाहकर भी वह अपनी बच्ची से मिलने नहीं जा सकता क्यूँकि शहर में दंगा है।

व्यंग्य साहित्य में सामाजिक संवेदना के अतिरिक्त इनका केंद्रीय विषय राजनीतिक समस्या भी रही है। व्यंग्य के माध्यम से किसानों, ग़रीबों, ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों, ग्रामीण व्यक्तियों की रेल में यात्रा, कर्फ़्यू के दौरान एक आम आदमी और पुलिस वालों की समस्या, दंगे के दौरान आम आदमी की समस्याओं आदि का बड़ा ही मार्मिक वर्णन किया गया है। ये वर्णन इतनी कुशलता से किए गए हैं कि पाठक को अपने हृदय में रसानुभूति के साथ–साथ संवेदना भी महसूस होती है। ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों की ख़स्ताहाल हालत पर भी व्यंग्य करते हुए उसकी स्थिति के बारे में पाठकों को परिचित कराने का कार्य ज्ञान चतुर्वेदी जी नें किया है। विद्यालयों की स्थिति के बारे में लिखते हुए वे कहते हैं ष्टाटपट्टियाँ कम हैं। जो हैं, वे भी कटी–फटी हैं। बच्चे एक–दूसरे के नीचे से खींचकर भाग रहे हैं टाटपट्टी के चीथड़े। जो सीधे–सादे बच्चे है, वे टाटपट्टी की आशा छोड़कर ज़मीन पर ही बैठ गए हैं, घास का टुकड़ा तलाश करके।"[5] विद्यालय हमारे देश के भविष्य का निर्माण करता है। वहीं पर कल के भारत के खेवनहार को भविष्य के लिए सजग किया जाता है। ऐसे प्रमुख स्थान की ऐसी व्यवथा होना बहुत ही दुःखदायी है। इसी व्यवस्था की समस्या का चित्रण करते हुए इस व्यंग्य लेख की रचना की गयी है। इसी तरह ग्रामीण क्षेत्र की यातायात व्यवस्था की ख़स्ताहाल हालत से भी पाठकों को रूबरू कराया गया है। इसी अध्याय के अंतर्गत ग्रामीण क्षेत्रों में यातायात के उपयोग में लायी जाने वाली एकमात्र बस के संदर्भ में उल्लेख किया गया है। इसी संदर्भ में वे लिखते हैं कि "यहाँ–वहाँ से उखड़ने–छीजते गल गए टिन के पतरों, हिलते, कटे–फटे टायरों, चकनाचूर से काँचों और बाढ़ में किनारे लगे मुरदों की आँतों की भाँति बाहर झाँक रही सीटों की स्प्रिंगों को यदि अजर आत्मा की भाँति बस के मृतप्राय शरीर में किसी ने उखड़ते नट बोल्टों से कहीं अधिक अपने अमर आत्मविश्वास द्वारा बाँध रखा है, तो वे हैं जनाब हफ़ीज़ मियाँ रंग्रेज, उरई वाले।"[6]

उक्त उदाहारण ज्ञान चतुर्वेदी के व्यंग्य 'दंगे में मुर्ग़ा' में परिलक्षित संवेदना को स्पष्ट रूप से उजागर करते हैं। उक्त उदाहरणों के आधार पर कहा जा सकता है कि ज्ञान चतुर्वेदी जी ने न सिर्फ़ सामाजिक सरोकारों को अपने व्यंग्यों का आधार बनाया है वरन् उन्होंने अपने व्यंग्यों के माध्यम से समाज में व्याप्त विसंगतियों के प्रति संवेदना जागृत करने का भी कार्य किया है। 'दंगे में मुर्ग़ा' व्यंग्य–संग्रह महज़ एक कुशल रचना ही नहीं है वरन् समाज को एक नयी दिशा दिखाने में भी सहायक है। ऐसी दिशा जहां व्यक्ति सामाजिक संवेदना के साथ–साथ व्यक्तिगत संवेदना के प्रति भी सजग हो।

संदर्भ सूची

1. रामचंद्र वर्मा (सं०); मानक हिंदी कोश– खंड १–५; हिंदी साहित्य सम्मेलन; प्रयाग; १९६६
2. ज्ञान चतुर्वेदी; किसानरू एक परिचय ('दंगे में मुर्ग़ा' व्यंग्य संग्रह में संकलित); किताबघर प्रकाशन; दिल्ली; १९९०; पृष्ठ १०
3. ज्ञान चतुर्वेदी; सती प्रथा के पक्ष में ('दंगे में मुर्ग़ा' व्यंग्य संग्रह में संकलित); किताबघर प्रकाशन; दिल्ली; १९९०; पृष्ठ ४७
4. ज्ञान चतुर्वेदी; दंगे में मुर्ग़ा ('दंगे में मुर्ग़ा' व्यंग्य संग्रह में संकलित); किताबघर प्रकाशन; दिल्ली; १९९०; पृष्ठ ९१
5. ज्ञान चतुर्वेदी; गाँव के स्कूल में कम्प्यूटर ('दंगे में मुर्ग़ा' व्यंग्य संग्रह में संकलित); किताबघर प्रकाशन; दिल्ली; १९९०; पृष्ठ ४१
6. ज्ञान चतुर्वेदी; गाँव के स्कूल में कम्प्यूटर ('दंगे में मुर्ग़ा' व्यंग्य संग्रह में संकलित); किताबघर प्रकाशन; दिल्ली; १९९०; पृष्ठ १२९